# नरेन्द्रमोहन का नाटयकर्म


## सुनीता
पी. एच–डी., हिन्दी विभाग, डॉ.बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा.


## प्रास्ताविक

नरेंन्द्रमोहन ने अपने लेखन का प्रारम्भ काव्य-रचना से किया। वे नाटय-रचना से बहुत बाद में जुडे। लगभग नयें दशक के प्रारम्भ में रंगमंच और नाटयलेखन से उनका जुडाव स्पष्ट हुआ है। नरेन्द्र मोहन ने डॉ. गुरुचरण सिंह से बातचीत में बताया है कि मोहनराकेश कृत 'आधे-अधूरे' गिरीश कर्नाड कृत 'तुगलक' आदि नाटकों के मंचन को देखकर चे प्रभावित होते रहे है।'

### 1. नाटय लेखन का प्रारम्भ:-

**डॉ. वीरेन्द्र सिंह के साथ बातचीत में डॉ. नरेन्द्र-**

मोहन ने कहा है - "एक लम्बे दौर तक नाटक पढता और देखता रहा था, पर नाटक लिखना मैंने काफी बाद में शुरु किया। मुझे याद नही कि नाटक लिखने की वास्तविक प्रेरणा मुझे कब और कहाँ से मिली? हाँ यह जरुर है कि बहुत कुछ ऐसा मन में कुलबलाता रहता था जिसे मैं अभिव्यक्त करना चाहता था पर जो अभिव्यक्त नही हो पाता था। हो सकता है जो कुछ मैं कविता में अभिव्यक्त करना चाहता था उसे कविता अपने रुप-बंध में समा पाने में असमर्थ रही है। यह भी संभव है कि मेरे भीतर की अकुलाहट - सुगबुगाहट किसी नये कला रुप में अभिव्यक्ति पाने के लिए तडपती रही हो और वही नाटय लेखन के रुप में सामने आ गयी हो।"

नरेन्द्र मोहन ने नाटयलेखन से पूर्व जबर्दस्त तैयारी की है। उन्हेंाने भारतेन्दु हरिश्चद्र, प्रसाद, भुवनेश्वर, जगदीश चद्र माथुर,मोहन राकेश,लक्ष्मी नारायण लाल,शंकर शेष आदि अनेक नाटककारों को अच्छी तरह पढा है।

उन्ही के शब्दों में - "मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया भारतेन्दु ने अपनी प्रहसन दृष्टी से, भुवनेश्वर ने अपने विसंगति बोध के जरिये ओर मोहन राकेश ने सम्बन्धों की नयी व्याख्याओं और नाटकीय शब्दकी शक्ति से" कुछ आलोचक 'सींगधारी 'को नरेन्द्र मोहन का पहला नाटक मानते है। जबकि डॉ. नरनारायण राय आदि ने "कहैं कबीर सुनो भई साधों" को नरेन्द्र मोहन का पहला नाटक स्वीकार करते है। वास्तविकता यह है कि नरेन्द्र के ये दोनों नाटक 1988 में प्रकाशित हुए थे "कहै कबीर सुनो भई साधो" पहले छपा है। यह सत्य है कि 'सींगधारी ' की रचना "कहै कबीर सुनो भई साधो" से पहले हो चुकी थी।इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए 'सींगधारी ' से नरेन्द्र मोहन के नाटयलेखन का प्रारम्भ माना जाय तो यह अनुचित न होगा। जहॉ तक मंचीय प्रदर्शन का सवाल हे 'कहै कबीर -' को अधिक चर्चा मिली। वैसे भी 'सींगधारी 'पहले नुक्कड नाटक की तर्ज पर लिख गया था। इसे नरेन्द्र मोहन के बाद में एक दूसरा स्वरुप प्रदान किया।

### 2. प्रकाशित नाटक:-

अब तक डॉ. नरेन्द्र मोहन के पाँच नाटक प्रकाशित हो चुके है -

1. 'कहें कबीर सुनो भई साधों '- 1987
2. 'सींगधारी ' - 1998
3. कलन्द - 1991
4. नोमैस लैण्ड - 1994
5. अभंगगाथा - 2..4
6. मि.जिन्ना - 2..5

### 1. कहै कबीर सुनो भाई साधो:-

"कहैं कबीर --------" नरेन्द्र मोहन का प्रकाशनक्रम से पहला नाटक है। यह मध्ययुगीन भक्तिकालीन सन्त कबीर के जीवन पर आधारित है। इसमें कबीर का सामाजिक बुराइयों का संघर्ष दिखाया है। इसकी कथा चौदह दृश्यों में विभाजित है। सात दृश्यों के बाद एक अन्तराल है। दृश्य एक से सात तक में कबीर के जीवन की बुनियाद रखी गयी है। इन दृश्यों का सायंश निम्नवत् है।

पहले दृश्य में गायक-गायिका आदमी एक और दो के सामने कबीर के व्यक्तित्व की प्रशंसा करते है कि किस तरह उन्होंने समाज में व्याप्त हिंसा, दमन,पाखण्ड आदि के बीच प्रेम की ज्योति जलाई है।

दूसरे दृश्य में कबीर का उदारवादी दृष्टीकोण देखने को मिलता है। वे काशी के पंडों, ब्राह्मणों से उनकी विचारधारा को लेकर खण्डन-मण्डन करते है। तिलकधारी उनसे रुष्ट होकर उन्हें पीटते है। कबीर अपने क्रोधित शिष्यों को शान्त कर सत्य और प्रेम की शिक्षा देते है।

तृतीय दृश्य में कबीर के माँ-बाप नीरु-नीमा कबीर की गतिविधियों को लेकर परेशान है। वे कबीर की शादी के बारे में सोचते है। सेना के व्दारा उन्हें मालूम पडता है कि कबीर को मारा गया है वे बहुत दु:खी होते है।

चौथे दृश्य में कबीर को बोधन, बिजली खाँ सुदर्शन से मगहर की दु:खी जनता के बारे में पता चलता है तो वे वोधन को दिल्ली में सत्संग कराने व सुल्तान को मगहर की असलियत के बारे में बताने को कहते है।

दृश्य पाँच में कबीर का सामना वनखंडी साधु की लडकी लोई से होता है। रैंदास कबीर की शादी लोई से कराने की बात आगे चलाते है।

दृश्य छ: में कबीर और लोई का प्रेम प्रसंग व साधु के भोजन की व्यवस्था लोई के व्दारा किया जाना तथा साहूकार के बेटे का ह्रदय परिवर्तन की बात है। दृश्य सात में लोई कबीर को कमाने के लिए कहती है। घर के सदस्य भी यही चाहते है। कबीर ऐसा ही करते है। इधर गायक - गायिका कबीर के व्यक्तित्व के बारे में प्रकाश डालते है। आठवें दृश्य में कबीर के बीबी-बच्चे भूख से व्याकुल है। कमाल कोतवाल से रामनाम पर पैसा ले आता है। लोई और कमाल खुश है। कबीर नाराज होते है।

नवें दृश्य में सुल्तान के व्दारा बोधन को मारे जाने का प्रसंग है। बिजली खाँ बदला लेने को कहता है। कबीर समझाने है,कहते है कि बोधन ने प्रेम,के लिए 'सर'दिया है।

दृश्य दस में कोतवाल साम्प्रदायिक दंगा करवाता है। कबीर - एकजूट होकर ब्राम्हणों,तुर्को,मुल्लओं से धर्म के बारे में खण्डन-मण्डन करते है और अपने विचार रखते है। ग्यारहवें दृश्य में मौलवी कोतवाल को और साम्प्रदायिक दंगे कराने को भडकाता है। कबीर को नीचा दिखाने के लिए रमजनिया नाम की वैश्य को हथियार बनाते है।

दृश्य बारह में सिकन्दर लोदी कबीर को नीचा दिखाने के लिए तथा उसे सजा देने के लिए अपने दरवारियों से सलाह व सुझाव लेता है। शेखतकी को जिम्मदारी सौपता है कि वह कबीर को दरबार में लाये।

दृश्य तेरह में कबीर सुल्तान के दरवार में पेश होते है। उनके सामने जात-पाँत, ऊँच-नीच, आत्मा, परमात्मा के बारे में अपने विचार प्रस्तुत करते है और सुल्तान को काफिर करार देते है। राजा के गुस्सा होने पर बाजीर उन्हें समझाता है और कबीर को नीचा दिखाने की तरकीब सुझाता है।

दृश्य चौदह में कबीर को नीचा दिखाने के लिए बजीर कोतवाल के यहाँ आता है। केतवाल साधु महन्त मोलवियों से उनक व्दारा की गयी कार्यवाही की जानकारी लेता है और कबीर को बदनाम करने के लिए रमजनिया का इस्तेमाल करने को कहता है।

दृश्य पन्द्रह में कबीर को रमजनियाँ को लेकर साधु, तुर्क, मैालवी बदनाम करवाते है। किन्तु वे सफल नहीं होते। कबीर वे व्यक्तित्व के सामने उनके सभी तरीके निष्फल हो जाते है। इस नाटक के संबंध में श्याम आनंद ने लिखा है -

"कहें कबीर ---- जनमानस के कबीर के उस अक्खड और आक्रामक व्यक्तित्व की रुढि को तोडता है। इस नाटक से कबीर की नितांत निश्छल छवि छलक कर हमारे सामने आती है। "

2. **'सींगधारी'** यह नरेन्द्र मोहन का एक तरह से पहला नाटक है।

इसकी मूल समस्या 'आतंकवाद' है। यह नाटक 1988 में लिखा गया था इस नाटक पर नरेन्द्र मोहन की लम्बी कविता 'एक अग्निकांड जगहें बदलता ' और 'एक अदद सपने के लिए ' का प्रभाव है इसमें एक मुख्य कथा के साथ एक लोककथा भी साथ-साथ चलती है। यह आठ दृश्यों में विभाजित है।

पहले दृश्य में नेताओं को सींगधारी बताया जाता है। प्यारे लाल एक लोककथा को कहता है कि नाई ने सिर के बाल काटते समय राजा के सिर नर सींग देखे। राजा से यह बात बतायी,राजा ने कहा यदि तूने यह बात किसी और से कही तो मैं मुझे फाँसी पर लटका दूँगा। नाई डर के भाग जाता है नेता अपने साथियों के साथ घटनाओं का निरीक्षण करता है जनता की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए दृश्य दो में नेता शिव को अपने पक्ष में मिलाने के लिए मिलकर काम करने के लिए कहता है। किन्तु पत्रकार शिच मना कर देता है सही घटनाओं को छापता है। प्यारे लाल लोककथा को आगे बढाता हुआ कहता है कि नाई राजा के डर से जंगल-जंगल भागता रहा,अन्त में एक पेड से लिपटकर कहता है कि राजा के सिर पर 'सींग'। पेड भी नाई के साथ कहने लगता है। तभी दंगा होने की सूचना मिलती है।

दृश्य तीन में शिव और जीतू पर जानलेवा हमला होता है दोनों भयभीत है। दोनों भयभीत है। तभी एक बच्चे पर गोली चलने की आवाज आती है वह उस घटना की जाँच करता है। नेता जी बताते है तुम्हें गलत फहमी हुई है,वहाँ बच्चा है ही नहीं। देखने पर बात सही निकलती है।

दृश्य चार में नेता जी के आदमी शिव विमल को समझाते है, वही पर प्यारे लाल की लडकी पर हमला होता है। शिव इस हमले के पीछे भी नेता का हाथ बताता है। नेता जी शिव से कहते है कि इसमें विदेशियों का हाथ है। हाथ के पीछे का हाथ। तुम विदेशियों से मिले हुए है। देश द्रोही हो। विदेशी ताकतों के एजेन्ट हो।उल्टा उसी पर आरोप लगा दिया जाता है।

पाँचवे दृश्य में हीरा उस घडदौंड में भाग लेता है जिसमें हमेशा नेता जी के आदमी जीतते है। जीतने की उम्मीद के साथ अपनी पत्नी सन्तो से भविष्य के ताने वाने बुनता है। प्यारे लाल उसे बताता है कि तेरे सपने जीता और मेरी तरह कभी पूरे नहीं होंगे। हम नेता ने बर्बाद कर दिये।

छठें दृश्य में भोला के जीतने पर बजाय इनाम के उसे इतना भयभीत कर दिया जाता है कि वह शिव से मना कर देता है अपनी स्टोरी छपवाने के लिए।शिव विमल आपस में आतंकवाद के खात्मे के तरीके के बारे में चर्चा करते है।

दृश्य सात में चुनावी सरगर्मियाँ है। गोली चलाने का आरोप प्यारे लाल पर लगा दिया जाता है। नेता शिव का अपने पक्ष में प्रचार करने के लिए कहता है उनके मना करने पर उसे देशद्रोही, अलगाववादी ताकतों को बढावा देने के आरोप में गिरफ्तार करवा दिया जाता है।

आठवें दृश्य में नेता जी शिव को डरा धमका कर बयान में विदेशी ताकतों का साथ देने की बात कबूल करवा लेते है। जज उसे फॉसी की सजा सुना देता है। सभी शिव के साथ कहते है - जज के सर पर सींग,जज के सिर पर सींग। क्योंकि जज नेता से मिला हुआ है। प्यारे लाल की पत्नी बुरी हालात में उससे मिलती है शालू के बारे में पूँछती है। प्यारे लाल उसे लोक कथा को आगे बताता है कि नाई के पेड से कहने पर समूचा जंगल व बाँसुरी वादक यही कहते है राजा के सिर पर सींग,राजा ने सुना तो उस नाई और बाँसुरी वादक के सिर कटवा कर चौराहें पर लटका दिये। प्यारे लाल भी बाँसुरी लेकर यही गाता है कि नेता के सिर पर सींग। उसके साथी भी यही कहते है नेता के सिर पर सींग।

यह नाटक मुख्यतः नुक्कड के रुप में लिखा गया था, इसलिए पाठक इससे शीघ्र तादात्म्य बैठा लेता है। 'पहले ऐन वक्त पर' शीर्षक से 'संचेतना' में प्रकाशित इस नाटक में अब नुक्कड नाटक के कोई चिन्ह नहीं है।

### 3. कलन्दरः-

कलन्दर नाटक नरेन्द्र मोहन ने 1991 में लिखा था उनका यह तीसरा नाटक है। कलन्दर मस्त मौला, अक्खड फक्खड फकीर थे। अपनी साधनाओं में रमने वाले। इस नाटक में लेखक ने 14 वी शताब्दी के अन्तिम दौर की धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितायाँ मे कलन्दरों को एक शक्ति के रुप में उभरने की कथा का नाटकीय संयोजन किया गया है। इनका समय 129. ई.-1296 ई. सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी का वक्त था। यह आठ दृश्यों में विभाजित है।

प्रथम दृश्य में एक कलन्दर और बुध्द का संवाद प्रारम्भ में है। कलन्दरों की बातचीत से पता चलता है कि उस समय के शासक कलन्दरों पर जुर्म किया करते थे।

दूसरे दृश्य में निजामुद्दीन औलिया की खानखाह में हमीद और अबूबक्र तूसी के माध्यम से बताया गया है कि कुछ कलन्दर जादू टोना में भी माहिर थे।

तीसरे दृश्य में बुध्दू को रहने के लिए बाहरी कलन्दर स्थान देता है जो उसका शुक्रगुजार है। बुध्दू कलन्दरों को बाकये बताता है। उधर तुराब सुलेमान को आप बीती बताता हे कि किस तरह जमीदार और मौलवी ने एक किसान और उसके बच्चे को मार-पीट कर मार डाला तब से उसे मौलवियों से नफरत हो गयी वह इसी भ्रमवश में युसूफ को मारने दौडता है।

चौथे दृश्य में - मास्टर युसुफ हमीद को खोजते हुए उसके पिता के यहाँ पहुँचते है। ताज्जुद्दीन और युसुफ में हमीद के कलन्दर बनने पर बहस होती है। उधर हमीद की सौतेली माँ हमीद के विरुध्द ताज्जुद्दीन को भडकाती है। हमीद अपने दोस्त मजीद के साथ घर आता है। ताज्जुद्दीन उसके बारे में पूछता है। वह कहाँ था। मजीद हमीद को उसके माँ के बारे में बताता है कि उसे उसने मालिक कूची की दावत में देखा था। हमीद को विश्वास नही होता।

पाँचवे दृश्य में हमीद की माँ शबनम चाल चलकर सहीदा का निकाह हमीद से होने को रोकती है और हमीद से गलत बोलती है कि मास्टर युसुफ ने सईदा का निकाह तुमसे करने को मना कर दिया है। हमीद टूट जाता हे।रिश्तों से नफरत हो जाती है। वह कलन्दर बनने को तैयार है उधर मजीद अपने सीदी मौला के उपदेश के माध्यम से उसे समझाता है। वह रात्रि में सपनें में बलवन को देखता है। जिसके आदमी उसके छुरा भौंक देते है।

छठे दृश्य में जलालुद्दीन को शबनम के माध्यम से पता चलता है कि मलिक कूची जैसे अमीरों,मालिकों ने उसके खिलाफ सजिश रची है। वह मालिक कूची को अपने सिपाहियों के माध्यम से बुलवा लेता है। मालिक तूची स्वयं बचने के लिए सीदी मौला का नाम लेता है। कहता है हमें आपके विरुध्द भडकाया है उसने,उधर जलालुद्दीन अब बक्रतूसी को सीधी भौला की जासूसी के लिए भेजता है।

दृश्य सात में बाहरी सुलेमान से हमीद के बारे में पूँछता है , जो अभी कलन्दर बना है। हमीद उनके पास ही आता है। वहाँ वह बुध्दू से वार्तालाप करता है। वहीं पर तुराब की हमीद से झडप हो जाती है कलन्दरों को लेकर। हमीद तुराब को कलन्दरों की शक्ति के बारे में अहसास कराता है।

इस नाटक की विषयवस्तु मौलिक है। हिन्दी में कलन्दरों को लेकर इसके पूर्व शायद ही कोई नाटय कृति रची गयी होगी।

### 4. 'नोमैंस लैण्ड' :-

डॉ. नरेन्द्र मोहन का यह चौथा नाटक है। इसकी रचना 1994 में हुई इसकी मूल समस्या उन पागलों की है जिन्हे 1947 में हिन्दुस्तान से पाकिस्तान, पाकिस्तान से हिन्दुस्तान के पागल खानों में तबादिला किया गया। इस नाटक पर मंटो की कहानी 'टोबाटेक सिंह' का प्रत्यक्ष प्रभाव है। नाटककार ने संकेत किया है मंटो की दो अन्य क्हानियों 'ठंडा गोश्त', 'खोल दो' से भी कुछ विचरोत्तेजना ली गयी है। इसमें पाँच दृश्य है।

पहले दृश्य का आरम्भ दो दफेदारों से होता जो आपस में पिंड का अर्थ एक दूसरे को समझाते है। पागल हीरा जमींदार का कत्ल करने की चर्चा करता है बिशन सिंह अन्यों के साथ स्वतन्त्रता की लडाई का नाटक खेलता है। अब्दुल समा को सम्बोधित करता है। अंग्रेज अफसर यह सब देख रहे है।

दूसरे दृश्य में पागल विशन सिंह अपने गाँव टोवा टेक सिंह के बारे में अपने साथियों को बताता है। रामकिशन जोग्राफी के बारे में अन्य पागलों के साथ बहस करते हुए कहता है-जलता लाहौर, सुलगता अमृतसर, झुलसती दिल्ली तुम सबने देखी ये सब हिन्दुस्तान-पाकिस्तान में चले गये,देश के दो टुकडे कर दिये गये। हम सबके रिश्तेदार हिन्दुस्तान,पाकिस्तान में चले गये। तीसरे दृश्य में विशन सिंह को अपने परिवार,मित्रों की याद आती है उसका मित्र फजलुद्दीन बेटी रुपा के साथ मिलने आता है वह उन्हें पहचान नहीं पाता। इसी तरह सिराजुद्दीन को अपनी बीबी,बेटी सकीना की याद आती है। जिन्हें दंगाइयों ने बलात्कार का शिकार बनाया। हीरा भी अपनी पत्नी की याद करता है जिसने दंगाइयों से बचाकर यहाँ उसे भर्ती करा दिया। दफेदार दो सबकी परेशानियों को सुनते है,उन्हें समझाते है।

चौथे दृश्य में देश के बँटवारे के साथ मजहबी आधार पर पागलों का भी बँटवारा होता है। दफेदार एक और दो सूची बनाते है उन्हे उनके मुल्क भेजने की। पागलों को बता दिया जाता है कि वे अपने-अपने मुल्क भेज दिये जायेंगे। वकील अपनी महबूबा से मिलने को व्याकुल है जो अमृतसर में रहती है। बिशन सिंह का दोस्त फजलुद्दीन उससे मिलने आता है। उसे बँटवारे की बात बताता है क्योंकि उसे हिन्दुस्तान भेजा जा रहा है। भरे दिल से विदाई लेता है।

पाँचवे दृश्य में पागलों को बॅटवारे की बात सुनकर सद्मा सा लगता है। वे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का अर्थ ही नहीं समझते,रामकिशन उन्हें समझाता है जोग्राफी के माध्यम से। दफेदार एक और दो उनसे चलने के लिए कहते है। वे जाने को तैयार नहीं है यही पर रहना चाहते है। एंग्लो इंडियन कहता है कि मैं कहाँ जाऊँगा क्योंकि ये तो अपन-अपने मुल्कों में चले जायेंगे। उन्हें जबर्ददस्ती से बॉर्डर पर ले जाया जाता है। वे बॉडर का अर्थ भी नहीं जानते। इन्सपेक्टर बताता है पागलों को-यह नो भैस लैण्ड है। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच का स्थान। विशन सिंह अपना गाँव ढोबा टेक सिंह पूँछता है। कहाँ है वह ? बताने पर कि वह पाकिस्तान में चला गया। सुनकर अपने साथियों के मध्य खडा हो जाता है। दफेदार एक और दो से कहता है कि मैं कहीं नहीं जाऊँगा उसे इतना गहरा सद्मा लगता है कि वह वहीं ढेर हो जाता है सभी पागल एकत्रित होते हें वहाँ जहाँ विशन सिंह पडा है।

निष्कर्ष यह है कि नाटक में चित्रित पागल पागल नहीं है,यह पागलों की दुनियाँ नही है। उनक पास्परिक संवाद उन्हें बुध्दिमान सिध्द करते है। असली पागल वे लोग है,जिन्होंने देश का बँटवारा किया है।

### 5. अभंगगाथा :-

हिन्दी नाटक के क्षेत्र में अपना वैशिष्टयपूर्ण स्थान प्रस्थापित करने वाले डॉ. नरेन्द्रमोहन का 'अभंगगाथा' नाटक भी वैशिष्टय पूर्ण है। महाराष्ट्र के श्रेष्ठ सन्त तुकाराम पर आधारित 'अभंगगाथा' में तीन अंक है। नाटक के प्रथम अंक का आरम्भ - बारकरियों की गायन मंडली के साथ होता है। जो तुकाराम का यह अभंग गाती है। 'आम्हां धर धन शब्दाचीच रत्ने ---- सदाशिव,ताना जी,दामोदर ने लोंगों को भडकाकर हिन्दू - मुसलमानों में दंगे फसाद करवाये है। ये देखकर वे खुश है कीर्तन मंडली गायन करते हुए उधर से गुजराती है जहाँ से महाराजा की सवारी निकलने वाली है। ताना जी,दामोदर,सदाशिव इनको हटाने का प्रयास करते है। उनकी बात न मानने

पर सदाशिव एक वारकरी के गले में छुरा घोंपता है। राजा की सवारी चली जाती है। सभी बारकरी इस तिकडी को घेर लेते है। सभी बारकरी मिलकर एक साथ "जिनकों है विठ्ठल प्यारे,यम भी उनके चरण झुका रे" गाते है।

दूसरे दृश्य में युध्द की भयाभयता चारों और छायी हुई है। हर साल गाँव पर सेनायें आती है। विनाश और मृत्यू का तांडव छा जाता है तुकाराम दुःखी होकर अपनी वणी खो देते है। रुकमा के अभंग गाने पर उनकी वाणी वापस आती है। तुकाराम के गृहस्थ जीवन में दमे की मरीज ज्येष्ठ पत्नी रुखमा है जो पति के भाव - विश्व को समझती है कनिष्ठ पत्नी जिजाई जो सदैव अभावग्रस्त एवं गृहस्थ जीवन के बोझ से त्रस्त झुंझलाई हुई है, तुकाराम का आत्मा संवेदनशील करुणामय चित्त,विठ्ठल के प्रति उपकी दीवानगी की हद तक भक्ति,पनपते प्रेम,परिवार के अन्य सदस्यों की विभिन्न प्रतिक्रियायें ये सब इस प्रवेश में उजागर हुई है।

तीसरे दृश्य में भयंकर अकाल का दृश्य विधान है। साधारण जनता जो भूख से तडप रही है। तुकाराम उनके लिए गेहूँ की बोरियाँ खोल देता है। जिजाई के विरोध की परवाह नहीं करता। परिणामतः तुकाराम का परिवार भी अन्नजल के अभाव में तडपता रहता है। तुकाराम के अभंग सुनकर भूख से अकुलाती हुई रुखना प्राण त्याग देती है।

चौथे दृश्य में संवेदना शून्य,भाव विठ्ठल हो रहे तुकाराम को शेख मुहम्मद पुनः आन्तरिक तेज का रुख अपनाने के लिए प्रेरित करता है। ऋण चुकाने में असमर्थ तुकाराम मंबाजी के चंगुल में फॅसता है। भ्रान्त - क्लान्त तुकाराम पहाडियों पर भटकते हुए आत्म शोध में दर-दर की ठोकरें खाते रहते है।

दूसरे अंक के पहल दृश्य में मस्तक पर लगे हुए जख्म वाला फतेहखां दिखायी देता है। तुकाराम के यहाँ शरण लेता है उनके अभंगों में अपनी आत्मा को खोजता है। तुकाराम उसकी सेवा करने के लिए घर ले आते है।

दूसरे दृश्य में जिजाई और भागीरथी का संवाद होता है। जिजाई गुस्से में आकर तुकाराम के वीणा के तार तोड देती है तुकाराम हँसकर कहते है यह अच्छा ही किया विठ्ठल तो मेरे मन में बसे हुए है जिजाई, तुकाराम फतेहखाँ की सेवा करते है। तुकाराम का भाई कान्होजी घर में अभंगो को लेकर बखेडा खडा कर मंबाजी से मिल जाता है। जिजाई का व्यक्तित्व ऊपरी तौर पर चख-चख करने वाला है,जबकि भीतर से वह तुकाराम की रंग-रंग से परिचित है।

तीसरे दृश्य में अभंगगान में तुकाराम से वर्ण श्रेष्ठता के मुद्दे पर भंबाजी की तू-तू मैं-मैं होती है। इस कहासुनी से क्रुध्द होकर मंबाजी और अन्य ब्राम्हण तुकाराम को पीटने का प्रयास करते है। परन्तु तुकाराम के साथी उसकी रक्षा करते है। शेख मुहम्मद उस घटना स्थल का निरीक्षण करने के लिए तुकाराम के साथ पहुँचता है। जहाँ मंबाजी के दो आदमियों ने दो किसानों की उनके बाल-बच्चों के साथ हत्या कर दी। तुकाराम इस अन्याय को खत्म करने का वीणा उठाते है।

चौथे दृश्य में मंबाजी मंगला नामक एक वैश्या को तुकाराम का चरित्र भ्रष्ट कने के लिए भेजता है। परन्तु तुकाराम का संतत्व, विवेक,वैराग्य वृत्ति एवं सभी में आत्मा और आत्मा में परमात्मा देखने की प्रवृत्ति से मंगला की मनोवृत्ति में परिवर्तन होता है। मंगला को यह सत्य विदित होता है। वह अभंगों का गायन करने लगती है। असलियत सामने आती है और मंबाजी की पोल खुलती है।

पाँचवे दृश्य में रामेश्वर भट्ट का आगमन होता है। मंबाजी तथा गाँव का पाटिल - रामेश्वर भट्ट के रुबरु तुकाराम का फैसला करना चाहता है रामेश्वर भट्ट यह निर्णय करते है कि तुकाराम की अभंगपोथियों को पत्थरों से बाँधकर उन्हें नदी में हुबो दिया जाय और भविष्य में अभंग रचना पर रोक लगा दी जाय। दुःखी तुकाराम नदी के किनारे एक शिला पर बैठकर चिंतन करते है-'अभंग ही जीवन है' वही अभंग न रहे तो अब जीवित रहने की क्या सार्थकता ? इसी विचार मंथन के साथ एक आध्यात्मिक अनुभूति होती है और उनके अभंग उनके पास लौटकर आते है।

तीसरे अंक के पहले दृश्य में भंडारा नामक पहाडी पर मंबाजी व्दारा भेजे गये तीन हत्यारे (सदाशिव,तानाजी,दामोधर) घात लगाये बैठे है। जब तुकाराम वहाँ नहीं मिलता तो घर आते है और कंबल औढे हुउे व्यक्ति को तुकाराम समझ का छुरा भौक देते है। और भाग जाते है। वहाँ फत्तेहखाँ होता है। जिजाई, तुकाराम, भागीरथी उसकी सेवा करते है। उसकी मृत्यू हो जाती है। तुकाराम पहाडी पर चले जाते है।भटकते हुए परमेश्वर के रुप में विलीन होने का अनुभव करते है।

दूसरे दृश्य में तुकाराम के लापता होने की खबर पूरे गाँव में फैल जाती है। यह अफवाह फैलती है कि मंबाजी ने ही हत्या करवाई है।

स्वयं मंबाजी भी यह समझता है। वह पश्चाताप की अग्नि में सुलगता है। तुकाराम से मिलने को व्याकुल हो उठता है। जिजाई और बारकरी उसे समझाते है कि अभंग के रुप में तुकाराम अमर है। तुकाराम के अव्दैत स्वरुप की अनुभूति को बखान बाकरी करते है। यहीं नाटक समाप्त होता है। डा. गिरीश रस्तोनी ने 'अभंग गाथा' की प्रथम अंक की तुलना में व्दितीय अंक को अधिक प्रखर और सघन माना है। उनकी दृष्टी में तुकाराम का व्यक्ति युगीन विसंगतियों से पूरी तरह जुडा हुआ है।

## 6. मि. जिन्ना :-

समकालीन नाटककार नरेन्द्र मोहन का' मिस्टर जिन्ना' (2..5) छठा नाटक है। जिसने नाटक के क्षेत्र में एक नये चितंन को उकसाया है। नाटककार ने महसूस भी किया है - 'जिन्ना के बहाने मुझे निजी के जरिये राजनीति को, स्मृति के जरिये इतिहास को देखने का जो नजरिया मिला, उसका मैने "मिस्टर जिन्ना" में भरपूर प्रयोग किया है।" ये नाटक पाकिस्तान के प्रथम राष्ट्रपति मुहम्मद अली जिन्ना पर आधारित है। लेखक ने इसमें उनके व्यक्तिगत जीवन व राजनीतिक जीवन से सम्बन्धित विचारों,सिध्दान्तों पर प्रकाश डाला है। यह नाटक 'अभंगगाथा' की तरह अंको मे विभाजित है। इसमें दो अंक है। प्रथम अंक में चार दृश्य है। व्दितीय अंक में तीन दृश्य है। प्रथम अंक के पहले दृश्य में ड्राइवर एक हनीफ आजाद, हमीद आपस में मुस्लिम तुष्टीकरण, अंगेजों की राजनीति की दाव पेचों , हिन्दू मुस्लिम बँटवार पर जिन्ना के विचारों पर वार्तालप करते है। अपने विचार भी राजनीति, साम्प्रदायिकता पर व्यक्त करते है। अन्त में जिन्ना की बहिन फतिमा व बेटी दीना के इश्क की चर्चा होती है।

दूसरा दृश्य दीना और पारसी लडके के प्रेम प्रसंग से शुरु होता है। फातिमा उन दोनों को देखकर उनकी बात जिन्ना तक पहुँचाने का आश्वासन देती है। जिन्ना देश की राजनीति से चिन्तित है। वह फातिमा से कहता है - जब तक माइनोरिटी अपना वतन या घर नहीं पा लेती दर-बदर भटकती रहेगी और दुनियाँ जहाँ के तख्ते से मिट जायेगी। फातिमा जिन्ना के विचारों से सहमत है। किन्तु दीना और जिन्ना में 193. के रेजूलेशन,गाँधी इकबाल,अबुल कलाम के विचारों और सिध्दान्तों को लेकर बहस होती है। जिन्ना के विचारों से दीना सहमत नही है। अन्त में 192. के नागपुर इजलॉस में जब गाँधी और मि. जिन्ना के बीच मतभेद हुए। जिन्ना ने कांग्रेस से इस्तीफा दिया। मु. अली, मौलवी शौकत अली की जिन्ना ने कंाग्रेस से इस्तीफा दिया। मु. अली, मौलवी शौकत अली जिन्ना से तकरार होती है। फातिमा जिन्ना के दोस्त जमशेद से आपसी प्रेम प्रसंग व फातिमा व्दारा जिन्ना को दीना के प्रेम प्रसंग के बारे में भडकाकर उसे अलग करवाता है।

दृश्य तीन में दीना अपनी माँ रत्ती की याद करते हुए उसकी बिल्लियों के व्यार करती है। जिन्ना से बगावत कर पारसी लडके से शादी करती है। पत्र लिखकर घर छोडती है। जिन्ना को फातिमा के माध्यम से पता चलता है गुस्से में आकर वह उसकी बिल्ली को मार देता है। दीना अपनी बिल्ली लेने घर आती है। फातिमा उसे घर आने से रोकती है। दीना फातिमा को खरी-खोटी सुनाती है। बिल्ली को जिन्ना व्दारा मारा जाना सुनकर दुःखी होकर लौट जाती है। फातिमा और बदरु में वार्तालाप होता है। जिन्ना बेटी दीना के जाने से दुःखी होकर अपने कमरे में अपनी पुरानी यादों को ताजा करने के लिए रत्ती का बॉक्स खोलता है। बहादूर यार जंग और जिन्ना में केबनेट मिशन प्लान की कनफरहेशन तजबीब के बारे में चर्चा करते है। तभी हिन्दू-मुस्लिम दंगो की खबर मिलती है। नौकर बदरु की बेटी को कुछ लोग अगुआ कर ले जाते है। वह पागल होकर नेहरु,गाँधी,जिन्ना सभी को गाली देता है। जिन्ना स्वतन्त्रत पाकिस्तान की घोषणा करता है।

देश स्वतन्त्र होने के बाद की स्थिति दूसरे अंक में दिखायी गयी है। दूसरे अंक के प्रथम दृश्य में साम्प्रदायिक दंगे भडक उठते है। जनता जिन्ना को घेरती है,धिक्कारती है। जिन्ना नेहरु और एडविना के रिश्तों पर फातिमा से चर्चा करते है। माउन्टबेटेन की चालों पर प्रकाश डालते है। जिन्ना का ह्रदय परिवर्तन होता है। वह निहत्थे हिन्दू-सिक्खों के मारे जाने पर कमिश्नर लियाकत अली को धिक्कारता है, हालात सुधारने का निर्देश देता है। तभी बदरु और जमशेद सियासत की हालात पर चर्चा करते है। जिन्ना के चले जाने पर फातिमा अपना प्रेम जमशेद पर प्रकट करती है। जिन्ना कमिश्नर को आडे हाथें लेकर कहता है कि मैं हिन्दू माइनोरिटी पर जुल्म नहीं होने दूँगा। वह बेहद चिन्तित और दुःखी होता है। दीना जिन्ना से फोन पर बात करती है।

दृश्य दो में जिन्ना बम्बई अपने निवास पर आने के लिए नेहरु से अनुमति लेते है। उनके बम्बई आने पर गाँधी उनसे मिलने के लिए आते है। एक राष्ट्र कौमी एकता के बारे में चर्चा होती है। गाँधी जिन्ना का हिन्दुस्तान का प्रधानमन्त्री तक बनने की बात कहते है किन्तु वह अपने मुस्लिम राष्ट्र की जिद पर है। जिन्ना की तबियत खराब होती है। दीना का पत्र आता है जिन्ना के लिए।

तीसरे दृश्य में जिन्ना की तबियत अधिक खराब होने पर डॉक्टर उसे हिल स्टेशन के लिए रेफर कर देते है। वहाँ फातिमा का सामना डॅनहम नाम की नर्स से होता है। जो देखने में दीना लगती है। डॉ. बक्स उनका इलाज करते है। जिन्ना को टी.बी. और कैसर है। वह डॉक्टर से कहते है कि मेरी जिन्दगी की सबसे बडी भूल है -पाकिस्तान। जिन्ना जानता है उसकी मौत उसका इन्तजार कर रही है। गाँधी के मरने की खबर सुनकर कहता है हारकर भी जीत गया वह,मैं जीत कर भी उससे हार गया। नर्स हॅनहग उसकी बेहद सेवा करती है। यही पर नाटक का अन्त होता है।

'मिस्टर जिन्ना' एक ऐसा नाटक है जो निजी जीवन के जरिथे राजनीति को, स्मृति के जरिये इतिहास को देखने का नजरिया प्रदान करता है और एक त्रासदी के विभिन्न रुपों और स्तरों की बेहद नाटकीय, आकर्षण और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है।'

## 3. दूरदर्शन के लिए लिखे गये नाटक :-

नरेन्द्र मोहन व्दारा लिखित 'उजाले की ओर' एक सीरियल के रुप में दूरदर्शन से प्रकाशित हुआ था। नरेन्द्र मोहन की डायरी से पता चलता है मई 1989 में ऋषिकेश मुखर्जी से इसी सन्दर्भ में मिलने बम्बई गये थे।

'कहैं कबी सुनो भई साधो' को भी प्रसारित करवाया। इसका प्रसारण दो भागों में होना निश्चित था। पहले भाग का प्रसारण पांच दिसम्बर 1989 के हुआ था। दूसरे भाग का प्रसारण बारह दिसम्बर 1989 को होना था। पर कबीर पंथियों ने इसके प्रसारण पर रोक लगाने के लिए हो-हल्ला मचाया और दूरदर्शन ने उनकी लचर दलीलों के आगे घुटने टेक दियो लेखकों, बुध्दिजीवियों साहित्य, कला संस्थाओं ने कहै कबीर--- के प्रसारण पर रोक का कडे शब्दों में विरोध किया। समाचर पत्रों ने भी लोक की अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के पक्ष को उठाया तथा नाटक के दूसरे भाग को अविलम्ब प्रसारित करने की भाँग की।

## 4. नरेन्द्र मोहन की नाटय - दृष्टी :-

नरेन्द्र मोहन नाटक को दृश्य काव्य मानने के साथ उसमें स्थित शब्द विधान को भी बराबर महत्व देते है। वे नाटकीय शब्द और रंग कार्य में भेद नहीं करते डा. वेदप्रकाश अमिताभ के साथ बातचीत में उनका कहना है कि "नाटक के शब्द का महत्व तो है ही - ऐसा शब्द जिसमें दृश्य और गति शामिल है। नाटकीय आलेख के शब्द में रंग और अभिनय सूक्ष्म रुप में खुशबू की तरह व्याप्त होता है। निर्देशक ,अभिनेता,नाटक के अंतरंग में छिपे रंग को मूर्त करने या बाहर लाने का,हरकतों में बाँधने का प्रयत्न करते है। मेरे विचार में नाटकीयशब्द और रंगकर्म एक ही सिक्के के दो पहलू है। उनमें विरोध नहीं है। डॉ. गुरुचरण के साथ संवाद में भी उन्होंने स्वीकार किया है - "नाटकीय शब्द में दृश्यत्व तो है ही ऐसे सत्य से घटना सामने आती है वह भी दृश्यत्व प्राप्त कर लेती है।"

नरेन्द्र मोहन के नाटकों में अंकों के स्थान पर दृश्यों को विशेष स्थान दिया गया है। 'अभंगगाथा' में जरुर उन्होंने अंकों को स्थान दिया है। दृश्यों को प्रमुख मानने का कारण सम्भवत: पाश्चात्य प्रभाव है। डॉ. चन्दन कुमार के साथ संवाद में उनका कहना हे -"नाटक को दृश्यों में बाँधने की प्रक्रिया को बेख्त के नाटकों से बहुत लोकप्रियता मिली। दृश्य योजना में एक के बाद एक दृश्य खडा करने की जो स्वतन्त्रता मिलती है। उस पध्दति का लाभ मैंने अपने नाटकों में उठाया है।"

यह पूछे जाने पर भी नाटकीयता लाने के लिए नाटककार को किन बातों की ओर ध्यान देना चाहिए नरेन्द्र मोहन का उत्तर है - नाटकीय शब्द, नाटकीय संवाद, नाटयनुभूति और नाटकीय व्यापार पर। "

## 5. नरेन्द्र मोहन के नाटकों का मंच - प्रदर्शन :-

नरेन्द्र मोहन के सभी नाटक मंच पर प्रदर्शित होते रहे है। उनकी डायरी से पता चलता है कि वे मंच प्रदर्शन से पूर्व नाटक के रिहर्सल से गहरे जुडे रहे है। 4 नवम्बर 1985 को पटना पहुँचने का उल्लेख करते हुए वे बताते है कि "कहै कबीर सुनो भाई साधों" का पहला प्रदर्शन 14 नवम्बर 1985 को निश्चित हुआ था।" यह प्रदर्शन पटना में आयोजित रंग शिविर में देवेन्द्र राज अंकुर के निर्देशन में हुआ।

दूसरा प्रदर्शन संभव नई दिल्ली की ओर से नाटय महोत्सव शिमला में 27 अक्टूबर 1987 को गेयटी थियेटर शिमला में देवेन्द्र राज अंकुर के निर्देशन में हुआ।

तीसरा प्रदर्शन 23, 24, 25 नवम्बर 1987 को श्री राम सेन्टर, नाई दिल्ली में। अन्य प्रदर्शन 15,16,17, फरवरी 1988 को हुए।

"कहै कबीर ---- का पहला भाग दिल्ली दूरदर्शन से 5 दिसम्बर 1989 को प्रदर्शित प्रथम प्रकाशन 1988 व्दितीय संस्करण 1991.

**सींगधारी :-** जनवरी 1984 में स्ट्रीट प्ले के रुप में चंडीगढ में खोला गया।

जनवरी 1985 में स्ट्रीट प्ले के रुप में रोहतक में रोहतक में खेला गया।

'सींगधारी' नाटक का प्रथम मंचन 'ऋतम्बरा' की ओर श्री राम सेन्टर (तलधर) नई दिल्ली, में 6 मार्च 1985 के डा. विनय अरुण माथुर के निर्देशन में हुआ। नाटक का प्रदर्शन सफल रहा किन्तु नरेन्द्र मोहन को सन्तुष्टि नहीं हुई। उन्हेंाने इस प्रदर्शन से कविता के शब्द की सीमाओं को यह चाना और उसे नाटक का शब्द बनाने के लिए स्वयं से जूझने लगे। जिसका परिणाम उनका यह नाटक है। प्रथम प्रकाशन 1988

**कलन्दर:-** 'कलन्दर' नाटक की पहली प्रस्तुति संगीत नाटक अकादमी दिल्ली की ओर से आयोजित उत्तर क्षेत्र नाटय समारोह 199. में 13 फरवरी, 199. को संभव आर्ट ग्रुप, नई दिल्ली व्दारा की गयी। इसके निर्देशक थे अखिलेख खन्ना। यह प्रदर्शन भी काफी सफल रहा।

दूसरी बार 'कलन्दर' का मंचन उर्दू ड्रामा फेस्टिवल में अस्मिता, नई दिल्ली की ओर से 2. फरवरी, 97 को श्रीराम सेंटर नई दिल्ली में अरविन्द गौड के निर्देशन थे। प्रथम प्रकाशन 1991

**नोमैस लैण्ड :-** नाटक की पहली प्रस्तुत श्री राम सेन्टर व्दारा आयोजित नाटय समरोह में 23 फरवरी ,1992 को 'साक्षी कला मंच' (दिल्ली) व्दारा हुई। इसके निर्देशक थे। श्री कृष्णकान्त। यह नाटक 'जिन्दाबाद मुर्दाबाद',नाम से खेला गया। कार्यशाला के दौरान कृष्णकान्त को यह नाटयलेखन अच्छा लचीला,प्रयोगधर्मी और मंच पर उतरने लायक लगा। प्रथम प्रकाशन इ 1994

**अभंगगाथा:-** 'अभंगगाथा नाटक की पहली प्रस्तुति रंगसमूह उज्जैन की ओर से,कालिदास अकादमी उज्जैन में 9जुलाई 2... को श्री सतीश दवे के निर्देशन में हुए। नाटक का दूसरा प्रदर्शन श्री रामसेंटर नई दिल्ली में रंग समूह, उज्जैन व्दारा मई 2... को किया गया। निर्देशक थे सतीश दवे।

दूसरा प्रदर्शन, रंग समूह,उज्जैन व्दारा जुलाई 2..., श्री राम सेंटर,नई दिल्ली में सतीश दवे के निर्देशन में हुआ।

**"मिस्टर जिन्ना":-**

मिस्टर जिन्ना नाटक के दो प्रदर्शन अस्मिता की तरफ से इंडिया हैबिटेट सेंटर,दिल्ली में 22,23 जून 2..5 को श्री अरविन्द गौड के निर्देशन में होने थे, लेकिन प्रदर्शन से एक दिन पूर्व दिल्ली पुलिस ने इन प्रदर्शनों पर अलोकतांत्रिक तरीके से निरंकुश प्रतिबंध लगा दिया। लेखकों,बुध्दिजीवियों, रंग कर्मियों और पत्रिकओं ने प्रतिबन्ध पर क्षोभ प्रकट करते हुए मौन जुलूस और केंडल प्रेटेस्ट मार्च का आयोजन करके जर्बदस्त विरोध किया इन मौकों पर रंगकर्मियों और लेखक संगठनों ने प्रतिबन्ध की भर्त्सपा करते हुए वक्तव्य दिये तथा प्रस्ताव जारी किये है। ग्रुप के कलाकारों ने सत्ता प्रतिष्ठानों के सामने नाटक के दृश्यों का मंचन करके जिस कला प्रतिबध्दता से अपना विरोध दर्ज किया,वह भारती रंगमंच के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा।

**निष्कर्ष:-**

आन्तरिक आकुलता और कुछ नये ढंग से चीजों को व्यक्त करने की अनिवार्यता ने नरेन्द्र मोहन को नाटक विधा की ओर आकर्षित किया है और इसके सकारात्मक परिणाम देखने में आये। वे अपने छ: नाटकों- 'सींगधारी','कहै कबीर सुनो भई साधो' 'कलन्दर', 'अभंग गाथा', 'नोमैसलैंड', मिस्टर जिन्ना मिस्टर जिन्ना की पूँजी के बल पर हिन्दी के सार्थक और प्रासंगिक नाटककारों की श्रेणी में स्थापित हो चुके है। उनके नाटकों के विधान में इतिहास की गम्भीर भूमिका है। वे शताब्धियों पुराने इतिहास में से घटनाओं और पात्रों का चयन करते है और वर्तमान युग की समस्याओं और सवालों के अनुरुप उनका रुपान्तर और भाष्य करते है। यही कारण है कि कबीर तुकाराम और जिन्ना जैसे चरित्रों से जुडी हुई रुढियाँ उनके नाटकों में टूटती है और आतंकवाद, साम्प्रदायिक जैसी ज्वलन्त समस्याओं पर विचार - विमर्श संभव होता है। सींगधारी नुक्कड नाटक के रुप में लिखा गया था। बाद में उसका स्वरुप बदल गया और उसमें नुक्कड नाटक के तत्व शेष नहीं रहे। इससे सिध्द होता है कि नरेन्द्र मोहन ने अपने नाटकों के अन्तिम पाठ का निर्धारण कई 'ड्राफ्टस' के बाद किया है। नरेन्द्र मोहन के कुछ नाटक विषय वस्तु की दृष्टी स सर्वथा नवीन है। कलन्दर उनमें से एक है।'नो मैंसलैंण्ड' में उन्होंने मंटो की कहानी को आधार बनाकर देश विभाजन के पागलपन पर लिखा है। प्रसिध्द मराठी कवि तुकाराम पर आधारित अभंगगाथा भी पर्याप्त चर्चित हुआ है। मि. जिन्ना एक विवादास्पद व्यक्तित्व पर आधारित है जैसा कि नाटककार का संकेत है कि वह जिन्ना को महानायक या खलनायक के रुप में न देखकर उनकी व्यक्तिगत जिन्दगी या अंतरंग को उभारने के लिए प्रतिश्रुत है। नरेन्द्र मोहन का नाटय लेखन जारी है और आशा है कि निकट भविष्य में विचारोत्तेजक नाटय कृतियां हिन्दी जगत को देते रहेंगे। नरेंन्द्र मोहन सभी के नाटक रंगमंच को ध्यान में रखकर लिखे गये है। अनेक प्रख्यात संस्थाओं ने इनका सफलता पूर्वक मंचन भी किया है।

## संदर्भ ग्रंथ


1. बात से बात चले - डॉ.नरेन्द्र मोहन,प्रकाशन अनीता श्रीवास्तव, नवलोक प्रकाशन,बी-422/21 भजनपुरा दिल्ली-110053 प्रथम सं.

2. नरेन्द्र मोहन: सृजन और संवाद-सं.डॉ.वीरेन्द्र सिंह,अनुराग प्रकाशन, नई दिल्ली-110030 प्र. संस्करण
3. नरेन्द्र मोहन रचनावली-खण्ड चार,सम्पादक-गुरुचरण सिंह और सुमन पंडित,संजय प्रकाशन,प्रथम संस्करण 2006 , 4 अंसारी रोड, दरियागंज-नयी दिल्ली -2

**सुनीता**
**पी. एच–डी., हिन्दी विभाग, डॉ.बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा.**